4. नारायणसिंह भाटी

1. विरह

इसमें कवि ने विरह की भावना को अपनी कविता के माध्यम से अभिव्यक्त किया है किसि प्रकार व्यक्ति या मानव मन किसी से प्रीत करता है और वह प्रीत सच्चे मन से करता है तब उसका मन उसमें ही उलझक रह जाता है। सदैव उसी के सम्बन्ध में चिंतन करता है। जब तक जिससे प्रीत करते है। तब तक उसके पास होने पर गुण अवगुण की कर्म का अहसास नही होता है। लेकिन जब उससे दुर चला जाता है। तो प्रीत की परख हो जाती है। अर्थात सुख का समय शीघ्र से बीत जाता है तो दुख या विरह का समय बहुत देर से या उसकी याद में बीतता है और उस प्रेम की याद एक भीड़ जहर की तरह होती है। जो भावनाओं और तर्कनाओं को उस प्रेमी में जगाता है हर सांस के साथ वो प्रेमी याद आने लगता है। क्योंकि यह प्रेम इतना गहरा होता है जो उसको अहसास कराता है। सच्चा प्रेम तो हृदय में होता है और रक्त बनकर रगों में दोड़ता है अर्थात. सच्चा प्रेम मन में समाहित होता है। जिसकी अभिव्यक्ति एक सच्चा प्रेमी ही कर पाता है एक सच्चा प्रेमी ही विरह के दुख को अभिव्यक्त कर सकता है।

Scanned by CamScanner

2. "पाषाण सुन्दरी"

इस कविता में कवि ने पत्थर की मूरत के सम्बन्ध में अपने भाव अभिव्यक्त किये हैं कि कारीगर अपनी कुशलता का परिचय देते हुए पत्थर में अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के माध्यम से सुन्दर मूरत का निर्माण करता है और वह सुन्दरता का परिचायक होता है और हमेशा के लिये अमर बनाते हैं तो कवि उस पत्थर की मूरत को ही अभिव्यक्त करते हुए कह रहा है कि यह सुन्दर मूरत सदियों से खड़ी हुई है उसके अंग से मानो प्रेम झलक रहा है और यह मूरत ऐसी लगती है कि जैसे सदियों से किसी का इन्तजार कर रही हो न जाने कितने ही प्रेमी उसको निरख कर उसके सामने निकलते फिर भी ऐसा लगता है कि उस सुन्दरी को अपने ही प्रेमी का इन्तजार है जिसके नीमित आज तक कवि ने तो न जाने कितनी ही कविताएं पढ़ी हैं कितने ही गीत सुने हैं और कितनी ही प्रेमिका को देखा हो जो समय के साथ सब कुछ भूल जाते हैं कवि ने पत्थर की मूरत में प्रेमिका नहीं देखी तो सदियों से खड़ी रहकर प्रेमिका इन्तजार कर रही। न जाने कितने ही लोग आए और चले गए। इस मूरत का योवन तो आज तक भी प्रेमी के इन्तजार में ज्यों का त्यों बना हुआ है इस मूरत में सब कुछ दुख सहन किया लेकिन फिर भी ज्यो का त्यो खडी है एक कारीगर की

कल्पना देखकर यह सुन्दरी आज भी अपने सुन्दर यौवन को संजोए हुए एक सुन्दर आस पर खड़ी है इस प्रकार कवि ने कल्पना के रूप में पत्थर को सजीव रूप मानकर अपनी कथा को अभिव्यक्त किया है।

3. मूमल"

इस कविता में नारी के रूप का सौन्दर्य की महिमा का वर्णन करते हुए मानव हृदय में नारी के सौन्दर्य के प्रति रुझान के भाव को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। मूमल' जो कि एक इतिहास प्रसिद्ध प्रेम कहानी की नायिका है उसके रूप सौन्दर्य के बारे में बताया है कि मूमल का रूप इतना सुन्दर था। जैसे मनुष्य के सपनो की कल्पना थी रूप का रस टपकता हुआ अंगों मे नजर आता है युगों युगों तक मूमल इस धरती पर जीवित रहेगी जब तक उसका योवन उमडते सागर के समान रहेगा उसके रूप के आगे दूसरे सारे रूप फिके से लगते है। जिसका बखान करते-करते कई कवि मर गए। लेकिन मूमल नित नए रूप में आज भी जीवित है ऐसा लगता है कि भावना की बागियों मे आज भी वो एक नए फूल के रूप में खिलती है फिर नए लोगों को रिझाने का काम करती है। जिसके कारण वो आज भी करोडों लोगों के वाणी मे निवास करती है इसलिये जो भी मूमल के रूप सौन्दर्य के बारे मे पढता है उसे उसकी कल्पना में साकार करने का प्रयास करता है। इस प्रकार मूमल सदियों से आज तक लोगो के दिल मे निवास करती है और उसकी सुन्दरता का कही कोई अन्त नही है।

Scanned by CamScanner